परिवार मूल्य, शिक्षा की नींव

डॉ. आभा सिंह, गिरधारी लाल शर्मा

परिवार बच्चे के जीवन को प्रभावित करने वाली सबसे पहली और महत्वपूर्ण संस्था है। इसका प्रभाव प्राथमिक, स्थायी और आंतरिक होता है। परिवार मानव जीवन के सांस्कृतिक विकास के प्रत्येक स्तर पर किसी न किसी रूप में अवश्य पाया जाता है। इस दृष्टि से परिवार एक सार्वभौमिक और सार्वकालिक संस्था रही है। प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो या आधुनिक, पूर्व का हो या पश्चिम का परिवार एक मौलिक संस्था रही है। जन्मते ही बालक परिवार का सदस्य बन जाता है। परिवार ही मुख्यतः उसका समाजीकरण करता है, उसे मानव बनाता है और समाज को समर्पित कर देता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक साधारणतः व्यक्ति परिवार का सदस्य बना रहता है। इसे मानव का एक लघु समुदाय कहा जा सकता है।

सभी छोटे-बड़े समुदायों/संगठनों के परिवार सबसे अधिक सार्वभौम है। यह सभी समाजों और कालों में पाया किसी न किसी परिवार का सदस्य अवश्य रहा है और भविष्य में भी रहेगा। सामाजिक विकास के प्रत्येक स्तर पर परिवार पाया जाता है। प्रत्येक प्रकार के समाज में चाहे वह सभ्य हो अथवा असभ्य, आदिम हो अथवा आधुनिक, ग्रामीण हो अथवा नगरीय परिवार का अस्तित्व सदैव रहा है।

परिवार के सदस्य भावात्मक आधार पर एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित रहते हैं। पति-पत्नी के बीच घनिष्ठ प्रेम, माता-पिता में अपनी संतान के प्रति वात्सल्य और त्याग, संतान में अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति प्रेम, श्रद्धा और आदर के भाव पाये जाते हैं। परिवार व्यक्ति का प्रथम सामाजिक पर्यावरण है। परिवार का बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह बालकों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके जीवन को संस्कारित करता है। उन पर अमिट छाप डालता है। उसके व्यक्तित्व के निर्माण में योग देता है। यदि परिवार का वातावरण प्रेम, सहयोग, सहानुभूति से परिपूर्ण है। घर के बड़े छोटे से स्नेह रखते हैं तथा छोटे बड़ों का सम्मान करते हैं। उन परिवारों के बच्चों में समायोजन, सहानुभूति, प्रेम जैसे गुणों का विकास स्वतः ही

Scanned by CamScanner